ओ३म्

गुरुकुल का संक्षिप्त परिचय

'वीरभूमि हरियाणा' राज्य के रेवाड़ी नगर से लगभग 8 किमी० दूर प्रकृति की नैसर्गिक व रमणीक गोद में 100 बीघा भूमि पर स्थापित गुरुकुल किशनगढ़–घासेड़ा विश्व में भारतीय सभ्यता, संस्कृति के धवल–कीर्ति ध्वजवाहक, विश्वप्रसिद्ध योगाचार्य, आयुर्वेदाचार्य, वेदाचार्य, वैयाकरणी, परम पूज्य श्रद्धेय स्वामी रामदेव जी महाराज के दिव्य व पुनीत संरक्षण में तीव्र गति से उन्नति की ओर अग्रसर है। यह गुरुकुल किशनगढ़ और घासेड़ा ग्रामों के धार्मिक, संस्कृत व संस्कृतिभक्त, दानी महानुभावों द्वारा प्रदत्त 100 बीघा भूमि में अवस्थित है। इसकी स्थापना 14 जनवरी, 1979 को मकर–संक्रान्ति के पावन अवसर पर महाशय हीरालाल आर्य जी के प्रयास से हुई। तत्पश्चात् सन् 1989 से गुरुकुल का संचालन करने वाले तपोनिष्ठ, वेद व वैदिक संस्कृति के प्रति सर्वात्मना समर्पित स्वर्गीय महात्मा धर्मवीर जी महाराज व गुरुकुल की कार्यकारिणी समिति ने सन् 2002 को श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ, वीतराग परम पूज्य श्रद्धेय आचार्य श्री बलदेव जी महाराज के पटु शिष्य, योग–ऋषि परम श्रद्धेय स्वामी रामदेव जी महाराज के दिव्य–पावन कर कमलों में गुरुकुल की बागडौर सौंप दी। तब से यह गुरुकुल हर क्षेत्र मे दिन–दूनी और रात चौगुनी उन्नति कर रहा है। इस समय गुरुकुल में हरियाणा, राजस्थान, पंजाब, हिमाचल, बिहार, गुजरात, झारखण्ड, मध्यप्रदेश, दिल्ली, यू०पी०, आदि 15 राज्यों के छात्र भी अध्ययनरत हैं।

गुरुकुलीय विशेषताएँ

- **शैक्षणिक सम्बद्धता :–** गुरूकुल **केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड नई दिल्ली से सम्बद्ध है।** यहां कला, वाणिज्य तथा विज्ञान संकायों की सुव्यवस्था है। इसके अतिरिक्त यहां नैतिक शिक्षा, योग शिक्षा तथा संस्कृत प्रत्येक विद्यार्थी के लिए अनिवार्य है। **(Affiliation Code - 531166, School No. - 20779)**
- **शुद्ध, शान्त व नैसर्गिक परिवेश :** आपका यह गुरुकुल सभी प्रकार के प्रदूषण व कोलाहल से मुक्त प्रकृति के पवित्र व सुरम्य गोद में स्थित है। यहाँ ब्रह्मचारी सभी प्रकार की चिन्ताओं व समस्याओं से दूर रहकर सौहार्द्रपूर्ण परिवेश में अपना सर्वांगीण विकास कर सकता है।
- **उन्नत शिक्षा, संस्कृत, संस्कृति व संस्कार :** गुरुकुल में प्राचीन व आधुनिक शिक्षा का समयानुकूल समन्वय करके विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास कराने का पूर्ण प्रयत्न किया जाता है। यहाँ संस्कृत धर्म–शिक्षा, सन्ध्या–यज्ञ, प्रवचनादि के माध्यम से विद्यार्थी में जहाँ एक ओर श्रेष्ठतम भारतीय संस्कार दिये जाते हैं, वहीं दूसरी तरफ अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, कम्प्यूटरादि शिक्षा के द्वारा उन्हें वर्तमान समाज में स्वावलम्बी, सम्मानित व सम्पन्न जीवन जीने के योग्य भी बनाया जाता है। हमारा पूर्ण प्रयास है कि हमारा विद्यार्थी अपनी श्रेष्ठतमी–ज्येष्ठतमी, सभ्यता–संस्कृति के प्रति निष्ठा व गौरवबोध से युक्त होकर विकास के चरम सौपान को प्राप्त कर सके।

- **योग्य समर्पित व निष्ठावान आचार्यगण :** अर्थ व स्वार्थ प्रधान इस युग में हम सगर्व व सहर्ष घोषित करते हैं कि हमारे अध्यापक व व्यवस्थापक बन्धु अत्यन्त योग्य, कार्य–कुशल, शिक्षा–व्यसनी, समाज, राष्ट्र, संस्कृति व मानवता के प्रति सर्वात्मना समर्पित हैं। सभी अपने–अपने विषयों के मर्मज्ञ व गवेषक हैं। अतः निश्चित रूप से हम मानव–निर्माण के इस पुनीत कार्य में अवश्य ही सफल होंगे।
- **वसुधैव कुटुम्बकम् :** इस वैदिक उदात्त भावना के अनुरूप ब्रह्मचारियों का संरक्षण व संवर्द्धन जाति (वर्ग), भाषा, प्रान्त, मत आदि के भेदभाव के बिना किया जाता है। विद्यार्थियों में परस्पर प्रेम, सहयोग, सामंजस्य, शिष्टाचार, सौम्यता आदि मानवीय गुणों का विकास कराया जाता है। इसके साथ–साथ उनमें अपनी सभ्यता, संस्कृति, राष्ट्र व मानवता के प्रति निष्ठा व कर्त्तव्य–भाव भी विकसित करने का प्रयास किया जाता है।
- **गुरू–शिष्य परम्परा :** गुरुकुलीय परम्परा के अनुसार यहाँ आचार्य और विद्यार्थी के बीच गुरू–शिष्य का पवित्र व आत्मीय सम्बन्ध है। गुरुकुल अर्थात् गुरू का परिवार जिसमें गुरूजन शिष्य को माता–पिता के समान स्नेह देते हुए उनके कल्याण के लिए सर्वदा तथा सर्वथा प्रयत्नशील रहते हैं। ब्रह्मचारीगण भी उन्हें पूरा सम्मान देते हैं। आज स्कूल–कॉलेजों में टीचर–स्टुडेण्ट के बीच बद से बदतर होते जा रहे सम्बन्धों के लिए गुरुकुलीय परम्परा अनुकरणीय है।
- **सेवा–प्रकल्प :** विद्यार्थियों में सेवा–भाव, कार्य–कुशलता, कर्मठता और स्वावलम्बनादि गुणों के विकास हेतु गुरुकुल में आधे घण्टे का सेवा–कार्य भी रखा गया है। इसमें विद्यार्थी, सफाई, बागवानी आदि विविध कार्यों को करते हैं।
- **निःशुल्क शिक्षा :** वैदिक परम्परा के अनुरूप यहाँ भी शिक्षा का कोई शुल्क नहीं लिया जाता है। अभिभावकों से केवल विद्यार्थियों के भोजन, आवास, पुस्तकालय आदि के लिए अल्प मात्रा में ही शुल्क लिया जाता है।
- **शुद्ध, पौष्टिक व ऋतु के अनुसार भोजन :** यहाँ गुरुकुल में विद्यार्थियों को शुद्ध, पौष्टिक व ऋतु के अनुकूल भोजन दिया जाता है। गुरूकुल की अपनी गोशाला से शुद्ध दूध, खेतों से सब्जी, फलादि भी प्राप्त होता है। विविध पर्वों व विशिष्ट अवसरों पर विशेष भोजन तथा समय–समय पर फलाहार की भी व्यवस्था है।
- **आवासीय व्यवस्था :** यहाँ विद्यार्थियों के निवास हेतु उचित सुविधाओं से युक्त छात्रावास है। छात्रों को योग्यतानुसार पृथक–पृथक छात्रावास में रखा जाता है।
- **योगासन, प्राणायाम, ध्यानादि का अभ्यास :** यहाँ विद्यार्थियों को प्रतिदिन आसन, प्रायाणाम ध्यानादि का अभ्यास करवाया जाता है। जिससे विद्यार्थी शारीरिक, मानसिक व आत्मिक रूप से सुदृढ़ होकर भौतिक व आध्यात्मिक दृष्टि से अपना सुखद व सफल जीवन यापन कर समाज को भी लाभान्वित कर सकें।

- **चिकित्सा–व्यवस्था :** गुरुकुल में अस्वस्थ विद्यार्थियों हेतु वैद्य व औषधालय की भी व्यवस्था है।
- **कम्प्यूटर–शिक्षा व विज्ञान–प्रयोगशाला :** इस समय गुरुकुल में कम्प्यूटर, भौतिक विज्ञान, जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान तथा भूगोल की प्रयोगशालाएँ भी हैं, जहाँ विद्यार्थीगण आचार्य जी के निरीक्षण व निर्देशन में प्रयोग करते हैं।
- **संगीत शिक्षा** : गुरुकुल में विविध सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं हेतु छात्रों को विशेष संगीत शिक्षा भी प्रदान की जाती है।
- **पुस्तकालय तथा वाचनालय :** गुरुकुल में प्राचीन वैदिक आर्ष साहित्य, आधुनिक साहित्यों से सुसज्जित एक पुस्तकालय तथा वाचनालय भी है। जहाँ विद्यार्थी स्वाध्याय के द्वारा अपना ज्ञान–विज्ञान बढ़ाते हैं। इसके अतिरिक्त विविध समाचार–पत्र व पत्रिकायें भी मँगवाई जाती हैं।
- **सामाजिक, राष्ट्रीय उत्सवों व वैदिक संस्कारों का ज्ञान :** गुरुकुल में होली, दीपावली, मकर–संक्रान्ति, श्रावणी (रक्षा–बन्धन) आदि को विशुद्ध वैदिक स्वरूप से मनाते हैं तथा छात्रों को जन्म, नामकरण, उपनयन, आदि वैदिक संस्कारों का भी व्यवहारिक ज्ञान कराया जाता है।
- **साधु–संतों, विद्वानों आदि प्रबुद्ध जनों द्वारा मार्ग–दर्शन :** परम पूज्य श्रद्धेय योगिराज स्वामी रामदेव जी महाराज की असीम कृपा से गुरुकुल में साधु–सन्तों, विद्वानों, प्रशासनिक अधिकारियों आदि प्रबुद्ध जनों का प्रायः आगमन होता रहता है। अतः उनका मार्ग–दर्शन भी समय–समय पर विद्यार्थियों को मिलता रहता है।
- **वस्तु भण्डार :** गुरुकुल में वस्तु–भण्डार भी है, जहाँ से छात्रों को आवश्यक वस्तुयें उचित मूल्य पर दी जाती हैं।